http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 4, 09-13

Article ID:660

तिलहनी फसलों से किसान अपनी आमदनी कैसे बढ़ाएँ

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2], देवेंद्र सिंह[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]सहायक वैज्ञानिक बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ किसानों की आर्थिक स्थिति देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा से सीधे जुड़ी हुई है। खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए किसानों को ऐसी फसलों का चुनाव करना चाहिए, जिनसे उन्हें उचित बाजार मूल्य मिल सके और उत्पादन लागत भी नियंत्रित रहे। तिलहनी फसलें इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सरसों, मूंगफली, तिल, सूरजमुखी, सोयाबीन और अलसी जैसी फसलें खाद्य तेल के साथ-साथ खली, पशु आहार तथा अन्य उपयोगी उत्पादों का भी स्रोत हैं।

भारत में खाद्य तेल की मांग बहुत अधिक है। ऐसे में तिलहनी फसलों का वैज्ञानिक तरीके से उत्पादन बढ़ाना किसानों की आमदनी में सुधार करने और देश को खाद्य तेल के क्षेत्र में अधिक आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो सकता है। हालांकि, तिलहनी फसलों से अच्छा लाभ प्राप्त करने के लिए केवल अधिक उत्पादन ही पर्याप्त नहीं है। किसानों को उन्नत किस्मों, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई, कीट एवं रोग नियंत्रण, फसल चक्र, उचित भंडारण और बाजार की जानकारी पर भी ध्यान देना चाहिए।

1. तिलहनी फसलों का कृषि में महत्व

तिलहनी फसलें वे फसलें हैं, जिनके बीजों से तेल प्राप्त किया जाता है। इनका उपयोग घरों में खाना पकाने, खाद्य प्रसंस्करण, उद्योगों और पशुपालन से संबंधित गतिविधियों में होता है।

भारत में प्रमुख तिलहनी फसलें निम्नलिखित हैं:

- **सरसों:** उत्तर भारत, विशेषकर हरियाणा, राजस्थान, पंजाब और उत्तर प्रदेश में महत्वपूर्ण रबी फसल।
- **मूंगफली:** खरीफ तथा कुछ क्षेत्रों में अन्य मौसमों में उगाई जाने वाली प्रमुख तिलहनी फसल।
- **तिल:** कम अवधि वाली फसल, जो उपयुक्त परिस्थितियों में कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए उपयोगी हो सकती है।
- **सोयाबीन:** तेल और प्रोटीन दोनों का महत्वपूर्ण स्रोत।
- **सूरजमुखी:** खाद्य तेल उत्पादन के लिए उगाई जाने वाली फसल।
- **अलसी:** इसके बीजों से तेल प्राप्त होता है और कुछ क्षेत्रों में इसकी खेती की जाती है।

किसानों को अपने क्षेत्र की जलवायु, मिट्टी, सिंचाई की सुविधा, उपलब्ध श्रम और बाजार की मांग के अनुसार तिलहनी फसल का चयन करना चाहिए। एक ही फसल को लगातार उगाने के बजाय फसल चक्र अपनाना भी लाभकारी हो सकता है।

2. सही फसल और किस्म का चुनाव करके बढ़ाएँ आमदनी

तिलहनी फसलों से बेहतर लाभ प्राप्त करने की शुरुआत सही फसल और उपयुक्त किस्म के चयन से होती है। प्रत्येक फसल की जलवायु, मिट्टी, बुवाई के समय और सिंचाई की आवश्यकता अलग-अलग होती है।

उदाहरण के लिए, हरियाणा और उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में सरसों एक महत्वपूर्ण रबी फसल है। वहीं, कुछ क्षेत्रों में मूंगफली, तिल या सूरजमुखी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अच्छे विकल्प हो सकते हैं।

किसानों को ऐसी उन्नत किस्मों का चुनाव करना चाहिए, जो उनके क्षेत्र के लिए अनुशंसित हों तथा जिनमें उत्पादन क्षमता, पकने की अवधि और प्रमुख रोगों के प्रति सहनशीलता जैसे गुण उपयुक्त हों।

बीज खरीदते समय प्रमाणित बीज को प्राथमिकता दें। स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय या कृषि विभाग से अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्मों और बुवाई के समय की जानकारी लेना उपयोगी रहता है।

सही किस्म का चुनाव फसल की असफलता का जोखिम घटाने और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में सहायता कर सकता है।

3. वैज्ञानिक खेती अपनाकर बढ़ाएँ उत्पादन

तिलहनी फसलों में अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए समय पर बुवाई और उचित फसल प्रबंधन आवश्यक है। बुवाई में देरी होने से कई क्षेत्रों में तापमान, नमी और फसल की बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

किसानों को बुवाई से पहले खेत की तैयारी, बीज की गुणवत्ता, उचित बीज दर और पौधों के बीच सही दूरी का ध्यान रखना चाहिए। बहुत घनी या बहुत विरल बुवाई से उत्पादन प्रभावित हो सकता है।

इसके अलावा, मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर जैसे पोषक तत्व तिलहनी फसलों की वृद्धि और बीज उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से सरसों जैसी फसलों में सल्फर की पर्याप्त उपलब्धता तेल उत्पादन और बीज की उपज के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है।

फसल की आवश्यकता से अधिक उर्वरक डालना जरूरी नहीं कि अधिक उत्पादन दे। संतुलित उर्वरक प्रबंधन से लागत नियंत्रित रखने और पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग करने में सहायता मिलती है।

4. पानी का सही प्रबंधन करके घटाएँ लागत

सिंचाई का उचित प्रबंधन तिलहनी फसलों की पैदावार और लाभप्रदता को प्रभावित करता है। अधिक पानी देने से कुछ परिस्थितियों में जलभराव, पोषक तत्वों की हानि और रोगों की समस्या बढ़ सकती है। दूसरी ओर, आवश्यक समय पर पानी न मिलने से पौधों की वृद्धि और बीज उत्पादन प्रभावित हो सकता है।

सरसों में फूल आने और फलियाँ बनने की अवस्था में पानी की उपलब्धता महत्वपूर्ण हो सकती है। मूंगफली में फली बनने और दाना भरने के समय नमी की कमी से उत्पादन प्रभावित हो सकता है। हालांकि, सिंचाई की जरूरत मिट्टी, मौसम, वर्षा और फसल की अवस्था के अनुसार बदलती है।

किसानों को खेत की नमी और फसल की स्थिति देखकर सिंचाई करनी चाहिए। खेत का समतलीकरण, उचित जल निकास और जहाँ उपयुक्त हो वहाँ सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का उपयोग पानी के बेहतर प्रबंधन में सहायता कर सकता है।

सही समय पर सिंचाई करने से उपलब्ध पानी का अधिक प्रभावी उपयोग किया जा सकता है और अनावश्यक खर्च कम हो सकता है।

5. कीट एवं रोग प्रबंधन से बचाएँ फसल का नुकसान

तिलहनी फसलों में कीट और रोग उत्पादन तथा बीज की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। सरसों में माहू, अल्टरनेरिया झुलसा और सफेद रतुआ जैसी समस्याएँ महत्वपूर्ण हो सकती हैं। मूंगफली में पत्ती धब्बा रोग तथा कुछ कीटों का प्रकोप हो सकता है। सोयाबीन में भी विभिन्न कीटों और रोगों की समस्या क्षेत्र के अनुसार देखने को मिलती है।

किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करना चाहिए, ताकि शुरुआती अवस्था में ही समस्या की पहचान हो सके। रोगग्रस्त पौधों, खरपतवारों और फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन भी उपयोगी हो सकता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाकर अनावश्यक कीटनाशक खर्च कम करने में मदद मिल सकती है। इसमें फसल चक्र, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, निगरानी, उपयुक्त जैविक उपाय और जरूरत पड़ने पर अनुशंसित कीटनाशकों का सही मात्रा में प्रयोग शामिल है।

कीटनाशक का चयन और उपयोग करते समय संबंधित फसल के लिए स्वीकृत उत्पाद, लेबल पर दिए गए निर्देश तथा कृषि विशेषज्ञ की सलाह का पालन करना चाहिए। इससे फसल की सुरक्षा के साथ-साथ लागत और पर्यावरणीय जोखिमों का भी बेहतर प्रबंधन हो सकता है।

6. फसल विविधीकरण से कम करें आर्थिक जोखिम

यदि किसान हर वर्ष केवल एक ही फसल पर निर्भर रहते हैं, तो मौसम, कीटों या बाजार भाव में गिरावट के कारण उनकी आय प्रभावित हो सकती है। तिलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने से उत्पादन प्रणाली में विविधता आती है।

उदाहरण के लिए, कुछ क्षेत्रों में धान-गेहूँ प्रणाली के विकल्प के रूप में उपयुक्त परिस्थितियों में सरसों या अन्य तिलहनी फसल को शामिल करने की संभावना देखी जा सकती है। इसी प्रकार, दलहनी और तिलहनी फसलों का उचित क्रम मिट्टी की उर्वरता और संसाधनों के उपयोग को बेहतर बना सकता है।

हालांकि, फसल बदलने का निर्णय केवल बाजार भाव देखकर नहीं करना चाहिए। मिट्टी, पानी, बुवाई की अवधि, उपलब्ध मशीनरी, श्रम और स्थानीय खरीद व्यवस्था का आकलन भी आवश्यक है।

किसानों को अपने खेत के एक हिस्से में नई फसल का प्रयोग करके उसके उत्पादन और लाभ का हिसाब रखना चाहिए। सफल परिणाम मिलने पर धीरे-धीरे क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है।

7. तिलहनी फसलों से अतिरिक्त आमदनी के लिए मूल्य संवर्धन

किसान केवल कच्चे बीज बेचने तक सीमित न रहें, बल्कि अपनी परिस्थितियों के अनुसार मूल्य संवर्धन की संभावनाएँ भी तलाशें। मूंगफली, सरसों, तिल और अन्य तिलहनी फसलों के बीजों से तेल निकालकर बिक्री करना कुछ क्षेत्रों में अतिरिक्त आमदनी का अवसर बन सकता है।

उदाहरण के लिए, सरसों से तेल निकालने के बाद प्राप्त खली का उपयोग निर्धारित गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों के अनुसार पशु आहार या अन्य उपयुक्त कार्यों में किया जा सकता है। मूंगफली से तेल के अतिरिक्त खाद्य उत्पाद भी तैयार किए जा सकते हैं। तिल का उपयोग खाद्य पदार्थों और मिठाइयों में किया जाता है।

हालांकि, प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने से पहले मशीनरी, बिजली, श्रम, पैकेजिंग, लाइसेंस, गुणवत्ता परीक्षण, खाद्य सुरक्षा नियमों और बाजार की मांग का आकलन करना जरूरी है।

छोटे किसान किसान उत्पादक संगठन, सहकारी समिति या स्थानीय प्रसंस्करण इकाई के साथ मिलकर भी मूल्य संवर्धन की संभावनाएँ तलाश

सकते हैं। सामूहिक प्रयास से कुछ खर्च साझा करने और बाजार तक पहुँच बढ़ाने में सहायता मिल सकती है।

8. सही समय पर कटाई, सफाई और भंडारण

अच्छी फसल उगाने के बाद उसकी कटाई और भंडारण पर ध्यान देना भी आवश्यक है। समय से पहले कटाई करने पर बीज पूरी तरह विकसित नहीं हो पाते, जबकि अधिक देर करने से कुछ फसलों में

फफूँद, गुणवत्ता में गिरावट और भंडारण के दौरान नुकसान का खतरा बढ़ जाता है।

यदि बाजार की स्थिति अनुकूल न हो, तो किसान सुरक्षित भंडारण की सुविधा होने पर बिक्री के समय का विवेकपूर्ण चुनाव कर सकते हैं। हालांकि, केवल अधिक कीमत मिलने की उम्मीद में फसल रोककर रखने से पहले भंडारण खर्च, गुणवत्ता और भाव में संभावित गिरावट का जोखिम भी समझना चाहिए।

9. बाजार की जानकारी और सही बिक्री रणनीति

तिलहनी फसलों से लाभ बढ़ाने के लिए किसानों को बुवाई से पहले ही बाजार की जानकारी जुटानी चाहिए। स्थानीय मंडियों के भाव, खरीद केंद्रों की उपलब्धता, व्यापारियों की मांग और परिवहन खर्च का आकलन उपयोगी होता है।

किसानों को अपनी फसल की गुणवत्ता बनाए रखनी चाहिए, क्योंकि साफ और उचित नमी वाले बीजों की बिक्री में सुविधा हो सकती है। तौल, गुणवत्ता और भुगतान की शर्तों को समझकर ही बिक्री का निर्णय लेना चाहिए।

सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) कुछ तिलहनी फसलों के लिए लागू हो सकता है, लेकिन इसका लाभ प्राप्त करने के लिए संबंधित फसल, राज्य, खरीद अवधि, पंजीकरण और निर्धारित गुणवत्ता की शर्तें पूरी करनी पड़ सकती हैं। इसलिए किसानों को संबंधित सरकारी एजेंसी या दाने झड़ने या मौसम के कारण नुकसान की आशंका बढ़ सकती है।

किसानों को फसल की परिपक्वता और स्थानीय कृषि सलाह के अनुसार कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद बीजों की उचित सफाई और सुरक्षित भंडारण आवश्यक है।

भंडारण से पहले बीजों में नमी का स्तर सुरक्षित सीमा तक लाना चाहिए। नमी अधिक होने पर

मंडी से वर्तमान खरीद व्यवस्था की जानकारी लेनी चाहिए।

सामूहिक बिक्री, किसान उत्पादक संगठन और सीधे प्रसंस्करण इकाइयों से संपर्क करना भी कुछ परिस्थितियों में बेहतर विपणन विकल्प बन सकता है।

10. सरकारी योजनाओं और कृषि सलाह का लाभ उठाएँ

किसानों को तिलहनी फसलों के उत्पादन और विपणन से संबंधित सरकारी योजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा कृषि तकनीकों की जानकारी लेते रहना चाहिए।

कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय और किसान उत्पादक संगठन उन्नत किस्मों, बीज उपचार, पोषक तत्व प्रबंधन, कीट नियंत्रण तथा बाजार की जानकारी प्राप्त करने के उपयोगी माध्यम हैं।

किसी योजना के तहत अनुदान, बीज सहायता या मशीनरी संबंधी लाभ उपलब्ध हो सकते हैं, लेकिन उनकी पात्रता और शर्तें समय तथा राज्य के अनुसार बदलती हैं। इसलिए आवेदन करने से पहले संबंधित विभाग से वर्तमान जानकारी की पुष्टि करनी चाहिए।

नई मशीनरी या प्रसंस्करण इकाई में निवेश करने से पहले लागत, संभावित उत्पादन, ग्राहक और बाजार की उपलब्धता का व्यावहारिक आकलन करना चाहिए।

11. आमदनी बढ़ाने के लिए किसानों की कार्ययोजना

तिलहनी फसलों से लाभ बढ़ाने के लिए किसान निम्नलिखित कदम अपना सकते हैं:

1. अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त तिलहनी फसल और उन्नत किस्म का चयन करें।
2. प्रमाणित बीज और समय पर बुवाई को प्राथमिकता दें।
3. मिट्टी परीक्षण के अनुसार संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें।
4. सिंचाई, कीट एवं रोग प्रबंधन का सही समय पर ध्यान रखें।
5. फसल चक्र और विविधीकरण के माध्यम से आर्थिक जोखिम कम करें।
6. कटाई के बाद सफाई, नमी नियंत्रण और सुरक्षित भंडारण अपनाएँ।
7. स्थानीय मंडियों और खरीद केंद्रों की जानकारी रखें।
8. प्रसंस्करण और सामूहिक विपणन की संभावनाओं का आकलन करें।
9. प्रत्येक फसल की लागत, उत्पादन और बिक्री का लिखित रिकॉर्ड रखें।

इन उपायों से किसानों को यह समझने में मदद मिलेगी कि किस फसल से वास्तविक लाभ अधिक मिल रहा है और कहाँ लागत कम की जा सकती है।